# एब्सर्ड नाट्य परम्परा और हिन्दी के एब्सर्ड {असंगत} नाटक

डॉ0 रमेष प्रताप सिंह
असि0 प्रो0 हिन्दी विभाग
श्री जे0एन0एम0पी0जी0 कालेज,लखनऊ

साहित्य का जीवन से सीधा संबंध होता है। जीवन की आशा–निराशा और आकांक्षा का सीधा संबंध साहित्य से ही होता है। समाज में घट रही घटनाएं साहित्य में स्पष्ट प्रतिबिम्बित होती है। साहित्यकार का दायित्व भी होता है कि वह जीवन मूल्यों की स्थापना करे और एक श्रेष्ठ मानव मूल्य का उदाहरण अपने साहित्य के माध्यम से पाठक के सन्मुख प्रकट करें। देशकाल परिस्थितियों में अनवरत बदलाव देखा जाता है जो प्रकृति का नियम भी है। एब्सर्ड नाटक दो विश्व युद्धों की विभीषिका और नये मानवीय मूल्यों की स्थापना का प्रतिफल है। असंगत नाटक जीवन को देखने, जानने, परखने का एक विशेष दृष्टिकोण है और जीवन के नये मूल्य भी यह प्रस्तुत करता है।

'एब्सर्ड' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग मार्टिन एसलिन ने किया। उन्होंने इसके दार्शनिक पक्ष पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए नाटक के सन्दर्भ में सन् 1961 में इस शब्द का पहली बार प्रयोग किया। 'द पेंगुइन डिक्शेनरी आफ थियेटर' 1966 में जान रसेल टेलर का मत है कि सन् 1950 के बाद उन नाटककारों का समूह जो अपने को किसी खास स्कूल का नहीं मानते हैं और विचार,चिन्तन, विषय और फार्म की दृष्टि से नाटक में बदलाव चाहता है,एब्सर्ड नाटककार है। असंगत नाटककार आयनेस्को ने असंगत नाटक पर अपना मत प्रकट करते हुए लिखा है कि असंगत उद्देश्य हीनता है। ''Abusurd is that which is devoid of purpose '' नाटकों में विद्रोह ,विकृति अजनबीपन आदि को उभारा गया है। ''एब्सर्ड थियेटर'' को विकसित करने वाले मुख्य रचनाकारों में इब्सन, बेकेट, ब्रेख्त, यूजीन आयनेस्को, ज्यों जेने, सार्त्र, एडवर्ड आलवी, हैरोल्ड पीटर आदि उल्लेखनीय हैं। इन नाटककारों का प्रभाव हिन्दी नाट्य लेखन पर भी पड़ा जो बहुत व्यापक न होते हुए भी नवीन है। इस संदर्भ में डॉ0 गिरीश रस्तोगी का कथन है '' यद्यपि नये नाटककारों और पश्चिम में एब्सर्ड नाट्य धारा के आरम्भ होने से पहले ही हिन्दी में भुवनेश्वर ने वर्तमान युग की ट्रेजडी को और उसके विरूद्ध निश्चित सांचे में ढली हुई उसकी अभिव्यक्ति, नाटक के विरोधाभास को अनुभव कर लिया था। उन्होंने महसूस किया है कि विवेक और तर्क तीसरी श्रेणी के कलाकारों के चोर दरवाजे हैं। उन्होंने विश्व मानव की पीड़ा, अव्यवस्था और विघटन, भय और निराशा, टूटते मानवीय रिश्तों के दर्द को अनुभव किया जो उनके '' ताँबे के कीड़े'' में तीखापन के साथ व्यक्त हुए हैं। ''ताँबे के कीड़े'' की तिलमिलाहट, आदमी की बेचैनी, उलझन, अकेलापन, तनावपूर्ण वातावरण, शिल्प का नयापन, आक्रमक चित्र एब्सर्ड नाट्य परम्परा का सशक्त उदाहरण है। इस प्रकार स्पष्ट है कि हिन्दी एब्सर्ड नाटक की परम्परा पाश्चात्य एब्सर्ड नाटक से पूर्व ही आरम्भ हो गई थी जिसके सूत्रधार भुवनेश्वर थे। एब्सर्ड नाटकों के सम्बंध में डॉ0 जयदेव तनेजा का मत है –''महायुद्धों के भयंकर नरसंहार ने जीवन और जगत के पीछे किसी दैवी शक्ति की तर्कसंगत भूमिका को अविश्वसनीय बना दिया था । मानव मूल्य नैतिकता और मर्यादा खोखले शब्द मात्र रह गये थे। मानव भविष्य आशा, आस्थाविहीन एक घने अंधेरे के सिवा कुछ भी नहीं था। अस्तित्ववादी जीवन दर्शन और ज्यां पाल सार्त्र तथा आल्वेयर कामू जैसे विचारक–रचनाकार उसी दौर की देन हैं। '' इसी परम्परा में आगे चलकर सैमुअल ब्रेकेट, आयनेस्को आदि ने एब्सर्डिटी अर्थात् अनर्गलता के जीवन दर्शन को स्वीकार कर एब्सर्ड नाटकों की रचना की।

वस्तु–विधान की दृष्टि से एब्सर्ड नाटक परम्परागत नाटको से भिन्न हैं। इन नाटकों की कथा जीवन की असंगतियों, तर्क हीनतओं और निस्सारता को उभारती है। डॉ0

गिरीश रस्तोगी का कथन है–'' यह नाटक कथाविहीन होते हैं–उनमें अंको का कोई विभाजन नहीं है क्योंकि इनके नाटककार जन्म ओर मृत्यु के बीच के काल खण्ड को अंकहीन मानते हैं। जीवन कभी भी शुरू हो सकता है कभी भी समाप्त, इसीलिए इन नाटकों में ''सुखान्त'' या ''दुखान्त'' की कोई चिन्ता नहीं हैं, न ही चरमसीमा का कोई महत्व है और न कथानक के आरम्भ, मध्य और अंत का कोई निश्चित समाधान।''

एब्सर्ड नाटकों के कथानक में समाज में फैली विसंगतियों को यथार्थ रूप में समाज के सामने लाकर रख दिया जाता है। इससे पहले तक जो नाटक लिखे जाते थे उनमें चरित्रों का परिचय देकर उनके अनुरूप कथानक में उन्हें रखकर किसी सामाजिक प्रश्न का अंत में उत्तर देने की कोशिश होती थी। ये नाटक उत्तर देने की गारन्टी से सौ प्रतिशत लदे रहते थे, लेकिन एब्सर्ड नाटक उत्तर देने का दम नहीं भरता। वह यह भी मानने को तैयार नहीं है कि हर संदर्भ में कोई निश्चित सही शाश्वत उत्तर है। भुवनेश्वर इस प्रकार के निष्कर्ष के बारे में कहते हैं'' एक समस्या को सुलझाना कई समस्याओं का सृजन करना है।''

एब्सर्ड नाटक अजीब इसलिए नहीं लगता कि इसमें यथार्थ में होने वाली घटनाएं गायब हैं, बल्कि इसलिए लगता है कि उसमें अब तक आदत से बने नाटकीय यथार्थ का भ्रम टूटता है। आदमी यथार्थ के अजनबीपन से इतना नहीं चौंकता जितना भ्रम के टूटने से। भ्रम के टूटने पर वह अपने को असहाय असुरक्षित और बेपनाह पाता है।

**हिन्दी के प्रमुख असंगत नाटक–** हिन्दी में असंगत नाटक के तत्व सर्वप्रथम भुवनेश्वर के नाटक 'ताँबे के कीड़े' और 'ऊसर' में दिखाई पड़ता है जो सन् 1930–35 के आस पास लिखे गये थे। डॉ0 गिरीश रस्तोगी 'ताँबे के कीड़े ' को विश्व का पहला असंगत नाटक मानती हैं। इसके पश्चात 1960 ई0 तक इस प्रकार के नाटक किसी भी नाटककार ने नहीं लिखे। 1963 में विपिन कुमार अग्रवाल के 'तीन अपाहिज' एकांकी नाटक से असंगत नाटक का क्रमिक विकास प्रारम्भ होता है। हिन्दी के प्रमुख असंगत नाटकों में–

| | |
|---|---|
| 1– भुवनेश्वर प्रसाद– | ताँबे के कीड़े, ऊसर |
| 2–विपिन कुमार अग्रवाल– | तीन अपाहिज, लोटन |
| 3–लक्ष्मीकान्त वर्मा– | अपना–अपना जूता, आदमी का जहर, रोशनी एक नदी है, रबर का बबुआ, सीमान्त के बादल, ठहरी हुई जिन्दगी, तीसरा आदमी तिन्दुवुलम आदि |
| 4–सत्यब्रत सिन्हा – | अमृत पुत्र |
| 5–मणि मधुकर – | रसगंधर्व, बुल बुल सराय |
| 6–ज्ञानदेव अग्निहोत्री– | शुतुरमुर्ग |
| 7–सर्वेश्वर दयाल सक्सेना– | बकरी |
| 8–ब्रजमोहन शाह – | त्रिशंकु, शाह ये मात |
| 9–रमेश बक्षी – | देवयानी का कहना है, तीसरा हाथी, वामाचार |
| 10– सुदर्शन मजीठिया – | चौराहा |
| 11– शांति महरोत्रा – | एक और दिन, ठहरा हुआ पानी |
| 12– हमीबुल्ला – | उलझी आकृतियां, दरिंदे |
| 13– सुदर्शन चोपड़ा – | अपनी पहचान |
| 14– चन्द्रशेखर – | कटा नाखून |
| 15– डॉ0 चन्द्र – | कुत्ते |
| 16–मुद्राराक्षस – | मरजीवा,योर्स फेथफुली, तिलचट्टा, तेन्दुआ |
| 17–डॉ0 लक्ष्मी नारायण लाल– | सबरंग मोहभंग |
| 18–काशीनाथ – | घोआसा |
| 19–शम्भूनाथ सिंह – | दीवार की वापसी |

20—राजकमल चौधरी — भग्नस्तूप एक अक्षत स्तंभ

असंगत नाटकों का अध्ययन आज अपेक्षित होते हुए भी उपेक्षित है। आज मनुष्य के जीवन में वैमनस्य, तनाव, कुण्ठा, असुरक्षा, अजनवीपन, संत्रास, सब कुछ खो देने का भय, टूटते विखरते मानव मूल्य, अस्तित्व का संकट आदि वृत्तियां प्रधान हो गई हैं। ऐसे में असंगत नाटक इन समस्याओं से संघर्ष करते हुए मनुष्य की अस्मिता की पहचान कराता है। असंगत नाटकों का जन्म भी द्वितीय विश्वयुद्ध के उपरान्त जन्मी विसंगतियों के फलस्वरूप हुआ है। आज के जीवन की विसंगतियां भी उन विसंगतियों से मेल खाती हैं। इसलिए मनुष्य की उन परिस्थितियों से सीधा मुठभेड़ करने में असंगत नाटक सहायक सिद्ध हो सकते हैं। एब्सर्ड नाटकों का एक दूसरा पक्ष भी है असुन्दर में सुन्दर की तलाश, अनास्था में आस्था की खोज, और फिसलन में ठहराव। असंगत नाटक विसंगतियों का चित्रण करते हुए जीवन को एक नई दिशा देता है। वह अधोमुखी मानव को उर्ध्वमुखी बनाने में सक्षम है।